(i) बनारस अंग की ठुमरी -

इस गायकी में स्वरों को लम्बे टेढ़ के साथ स्वरों को विस्तारित किया जाता है बनारस अंग की ठुमरी अधिक विलम्बित रूप में गायी जाती है। और क्रमश: स्वरों की भाव अभिव्यजना की जाती है। जो ख्याल गायकी में समाप्त होती है। इस शैलि में भी विलम्बित के बाद कहरवा आदि तालों में गाने का रिवाज है। पुरब अंग की ठुमरी में → स्वर्गीय + महादेव मिश्रा, स्वर्गीय सिद्धेश्वरी देवी, स्वर्गीय रसुलन बाई आधुनिक समय में गिरिजा देवी, सविता देवी, पुर्णीमा चौधरी आदि पुरब अंग की ठुमरी गायकी की प्रतिनीधि हैं। सविता देवी, स्वर्गीय सिद्धेश्वरी देवी की पुत्री हैं। ख्याल में आप आकाशवाणी में टॉप ग्रेड की कलाकार हैं। दौलत राम महिला महाविद्यालय से आप सितार की प्रोफेसर पद से अवकाश प्राप्त की हैं। पूर्णिमा चौधरी, स्वर्गीय महादेव मिश्रा की शिष्या है तथा देश -विदेश में इनकी प्रस्तुतियाँ होती है। पुर्णीमा जी महादेव मिश्रा की ठुमरी गायकी की प्रतिनीधि हैं।

(ii) पंजाब अंग की ठुमरी -

इस ठुमरी गायकी में प्रायः लोग धिमा कहरवा तालों का प्रयोग करते हैं। तथा इसमें स्वरों का प्रयोग प्रवाह के रूप से शुद्ध कोमल का क्रमशः प्रयोग करते हुए गायकी में एक प्रकार का स्वर खींचा करते हैं। जो पंजाब अंग की ठुमरी गायकी को पंजाब के लोक संगीत का सीधा प्रभाव इस गायकी पर पड़ता है।

उस्ताद बड़े गुलाम अली खां साहब इस गायकी के प्रतिनिधि रहे हैं। पाकिस्तान के उस्ताद नजाकत अली खां इसी अंग की ठुमरी गाते थे। वर्तमान समय में प्रसिद्ध ख्याल गायक पं० जगदीश प्रसाद पंजाब अंग की ठुमरी गाते हैं।

(iii) गया अंग की ठुमरी -

बिहार में गया भी संगीत का एक प्रसिद्ध स्थान रहा है। जहाँ एक से बढ़कर एक हारमोनियम वादक, सरोदवादक, इसराज वादक, पखावज वादक हुए हैं। गया के पौथा प्रखंड अन्तर्गत ईश्वरपुर संगीतों का गाँव रहा है। जहाँ अनेक विशारद गायक वादक हुए हैं। गया की ठुमरी गायकी में पूर्व के समान ताल योजना होती है। परन्तु रंग, ताल पूरब अंग के होते हुए भी स्थानीय संगीत